निराला कृत 'सरोज स्मृति' का वस्तुगत विश्लेषण

डॉ. सरिता, सहायक प्राध्यापक,
श्यामलाल कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय

निराला कृत 'सरोज स्मृति' एक लम्बी कविता है। लम्बी कविताओं में वैयक्तिकता, सामाजिकता, यथार्थपरकता आदि भावभूमियों की प्रधानता होती है। परन्तु, मानव मन में अन्तर्निहित उदात्त की व्यंजना उनकी मुख्य विशेषता है। मन की गहन पर्तों के अन्धकार के बीच कवि आलोक का साक्षात्कार करता है। 'सरोज स्मृति' में कवि निराला ने मानवतावादी धारणा के सापेक्ष नितान्त व्यक्तिगत प्रसंगों के माध्यम से युगीन विसंगतियों को उजागर किया है। समकलीन परिस्थितियों में स्वप्न के टूटने पर दुगने साहस के साथ संघर्ष के औदात्य की कलात्मक अभिव्यक्ति इस कृति में दिखाई देती है। लम्बी कविताओं के रचयिता निराला कथात्मक अन्विति, संरचनात्मक कसावट, भाषिक अर्थवत्ता नाटकीय संलाप की दृष्टि से बहुचर्चित रहें हैं। इन की कविताओं में उदात्तता का तत्व, वाच्य या व्यंग्य रूप में अनिवार्यतः बिखरा हुआ है। यह उदात्तता ही उनकी रचनाओं का प्राण या केन्द्रिय भाव है। 'सरोज स्मृति' में ऐसे स्थल हैं जहाँ कवि ने परम्परागत नखशिख निरूपण व अतिरंजित श्रृंगार चित्रण से हटकर शुचि उपमानों एवं स्वरमाधुर्य द्वारा प्रत्यक्ष दिखाया है। दूसरी ओर 'पूर्ण आलोक वरण, ज्योतिशरण तरण' के द्वारा मृत्यु को रूप नाम तज शाश्वत विराम का वरण कहा है–

चढ़ मृत्यु–तरणि पर तूर्ण–चरण
कह– पितः पूर्ण आलोक वरण
करती हूँ मैं, यह नहीं मरण
सरोज का ज्योतिशरण तरण।

'सरोज स्मृति' दुख की आन्तरिक दुनिया से बाहर आने की चीख मात्र नहीं है, बल्कि मृत्युपरान्त अधिकारों के प्रति जागरूकता की ध्वनि है। यत्र तत्र यथार्थ के तीखे प्रहारों से कवि का स्वप्नलोक खण्डित हो चुका है। लेखक का साहस द्विगुणित गति से संघर्ष की ओर गतिमान है–

धन्ये मैं पिता निरर्थक था
कुछ भी तेरे हित न कर सका।
लख कर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ–समर।

यहाँ कवि की असमर्थता का अहसास ध्वनित हो उठा है तो दूसरी ओर–

ये कान्यकुब्ज कुल कुलांगार
खाकर पत्तल में करे छेद।

धर्मान्धता, रूढ़िवादिता में हास्य व्यंग्य मुखरित है। पारिवेशिक गतिविधियों, परम्पराओं और आस्थाओं से कवि के भीतर जो गहरा अन्तर्द्वन्द्व था उसे यहाँ यथार्थ अभिव्यक्ति मिली है। साम्प्रदायिकता, आडम्बर प्रधान नए समाज, जमींदारों व अत्याचारियों का भंडाफोड़ निराला ने किया है।

यद्यपि निराला ने छंद बन्द को तोड़ा तथापि वे मूलतः प्रगीत वृत्ति के कवि हैं। डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव ने उनकी रचनाओं में गेयता, लयात्मकता व छन्दबद्धता के प्राधान्य के कारण उन्हे गीतिवर्ग में परिभाषित किया है। स्वानुभूति का 'स्व' जब लयात्मक होकर शब्दबद्ध होता है तब उस प्रगीतात्मक अभिव्यक्ति में वस्तुगत व आत्मगत का भेद मिट जाता है। उदाहरणार्थ–

दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही।

श्रेय के लिए संघर्ष करने और सहने की बात निराला ने 'सरोज स्मृति' में बड़े मुक्त रूप में रखी–

सोचा था नत हो बार–बार
यह हिन्दी का स्नेहोपहार
यह नहीं हार मेरी भास्वर
यह रत्नहार, लोकोत्तर वर।

यहाँ भावों का गहन अनुभूति है जिसके कारण स्वाभाविक लय ही उसका गेयत्व है।

निराला की लम्बी कविताएँ हिन्दी कविता की अक्षय निधि हैं। उनकी अन्तर्वर्ती एवं बाहरी विलक्षणताओं के परिप्रेक्ष्य में आलोचकों ने उन्हें महत्काव्योचित औदात्य से परिपूर्ण माना है। निराला की 'सरोज स्मृति' अपने ढंग की अनूठी एवं बजोड़ रचना है जो नितान्त शोकोद्गार न होकर एक कलाकृति के रूप में समादृत है। कवि नितान्त व्यक्तिगत प्रसंगों को उठाकर भी वस्तुपरक तटस्थता का निर्वाह कर सकने में सफल हुआ है। 'सरोज स्मृति' में करूण रस की सृष्टि हुई है और उसी की दृष्टि से कथा विस्तार हुआ है–

मुझ भाग्यहीन की तू सम्बल
युग वर्ष बाद जब हुई विकल।

इस कृति के नायक स्वयं महाप्राण निराला हैं। डॉ. बच्चन सिंह ने निराला की कविताओं का विश्लेषण करते हुए लिखा है– सरोज स्मृति विसंगति और अनगढ़पन दोनों में उनके व्यक्तित्व को उजागर करती है। ऐसा मालूम पड़ता है कि मानों युग की सम्पूर्ण विषमताएँ, विद्रुपताएँ एवं विसंगतियाँ उनके व्यक्तित्व में आकर पूंजीभूत हो गयी हैं। एक ओर यह निराला की ट्रेजडी से सम्बद्ध है तो दूसरी ओर युग की ट्रेजडी से।'

निराला भाषा के शिल्पी हैं। कथ्य को जीवन्तता अथवा अर्थवत्ता देने में वे समर्थ रहे हैं। यद्यपि उनकी लम्बी कविताएँ अत्यन्त क्षीण कथावस्तु पर टिकी हैं तथापि उनकी संरचनात्मक प्रवृति, चाक्षुस बिम्ब प्रणाली, कथोपकथनों की त्वरागति, मूर्तविधायिनी घटना संयोजना एवं प्रभावी प्रस्तुतिकरण, कथाक्रम में प्रवाह बनाये रखता है। उक्त विशेषताओं के साथ नाटकीयता का समावेश भी उनकी कविताओं में हुआ है। लेखक की लम्बी कविताओं के साथ पाठक का तादात्मय नाटकीय वृति के कारण ही सम्भव हुआ है। 'सरोज स्मृति' में यह आत्म सम्बोधनात्मक प्रवृति और भी प्रभावी ढंग से चित्रित हुई है। संपादको के पास से लौटी रचनाओं से निराला को आत्मिक दुख हुआ उसका अंकन इन पंक्तियों में हुआ है–

लौटी रचना लेकर उदास
ताकता हुआ मैं दिशाकाश
बैठा प्रान्तर में दीर्घ प्रहर
व्यतीत करता था गुन गुनकर।

नाटकीयता का इससे अच्छा प्रभाव और क्या होगा कि 'सरोज स्मृति' की छोटी सी दुनिया में कवि की कई तरह की दुनियासमाई हुई है और इसका केन्द्र स्वयं कवि है। ननिहाल की दुनिया स्वयं सरोज की बालक्रीड़ाओं के लिए है, इसलिए कवि उससे बंधा हुआ है। साहित्यिक विफलता की कचोट इसलिए है कि सरोज की अनिवार्यताओं का निर्वाह लेखक नहीं कर सका, पुनर्विवाह के सूत्र की अस्तव्यस्तता के मूल में भी सरोज सम्बन्धी जिम्मेवारी का अहसास ही है एवं अनगिनत भावनाओं में करहाते कुलांगारों को धिक्कारने का कारण भी लेखक का पुत्रमोह ही है। इस प्रत्यक्ष दुनिया के बाहर एक अप्रत्यक्ष दुनिया कवि की मृत पत्नी की है जिसे कवि ने पूर्वदीप्ति के रूप में याद किया है।

निराला की लम्बी रचनाओं में सामाजिक अन्तर्विरोध व्याप्त है जिसका सम्बन्ध रचनाकार की 'आत्मा के इतिहास' और 'आत्मा के भूगोल' से है। निराला का काव्य विकास विविधरूपी, विषम और तनाव पूर्ण है। यह ऐसे कवि की दुनिया है जिसमें कविताओं से माान्यताएँ बन सकती हैं परमान्यताओं से कवि नहीं। 'सरोज स्मृति' सूक्ष्म प्रतीकात्मक विन्यास एवं अलंकृति की दृष्टि से छायावादी कृति है लकिन पूरी कविता का वर्ण्य जगत और विन्यास छायावादी दायरे से बाहर लगता है।

एक ही कविता में कोमलता और पारूष्य के स्थल एक दूसरे को अर्थ दे सकें–यह निराला ने सम्भव कर दिखाया है। 'सरोज स्मृति' में एक ओर सरोज के रूपांकन का चित्र है तो दूसरी ओर कान्यकुब्जों की खरी आलोचना। लेकिन दोनों स्थितियों में एक द्वन्द्वपूर्ण सामन्जस्य है। यही नहीं कहीं कहीं निराला ने एक स्थल पर दो अलग अलग रसों की सृष्टि करके विचित्र वातावरण उपस्थित कर दिखाया है–

सोचा मन में हत बार बार
ये कान्यकुब्ज कुल कुलागार
खाकर पत्तल में करें छेद
इनके कर कन्या, अर्थ खेद
इस विषय बेल में विष ही फल
यह दग्ध मरूस्थल नहीं सुजल।

निराला की लम्बी कविताओं में अप्रस्तुत योजना अपने चरम प्रकर्ष पर है। हाँ उनकी अप्रस्तुत योजना चामत्कारिक सृष्टि के लिए नहीं बल्कि भाव दीप्ति में सहायक होकर आयी है। कवि ने अर्थालंकारों में सादृश्यमूलक अलंकारों का अधिक प्रयोग किया है। उपमा पर निराला का विशेष अधिकार है। इस सम्बन्ध में सरोज के यौवनागम का अंकन देखिए–

लावण्य भार थर थर काँपा
कोमलता पर भास्वर
ज्यों मालकोश नववीणा पर
+ + +
नैश स्वप्न ज्यों तू मन्द मन्द
फूटी उषा जागरण छन्द

निराला कृत 'सरोज स्मृति' तथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से सशक्त एवं प्रभावी है। वृहद ज्ञान अनुभव, एवं सघर्ष उनकी लम्बी कविताओं में जीवन्त हो उठे हैं। उनकी रचना सुनी सुनाई किसी घटना पर आधारित न होकर विशेष पृष्ठभूमि पर टिकी है। वस्तुतः उनकी काव्य यात्रा में उनके जीवन के अनुभव आये हैं। उन्होंने यथार्थ की कठोर भूमि पर खड़ें होकर समसामयिक परिवेश को कलात्मक अभिव्यक्ति दी है, इसलिए उनकी लम्बी कविता 'सरोज स्मृति' युग की वास्तविक बोध भूमि है।